ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

सोशल मीडिया का परिवारों पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

The Impact of Social Media on Families: A Sociological Analysis

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

रंगोली चंद्रा
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

कौशलेन्द्र विक्रम सिंह
सहायक प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
पिहानी, हरदोई,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

सोशल मीडिया लोगों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो गया है। अब सोशल मीडिया के कारण लोगों की जीवनशैली, सामाजिक संबंध, और पारिवारिक संबंध तेजी से बदल रहे हैं। सोशल मीडिया का परिवारों पर सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रभाव है। जहाँ एक ओर सोशल मीडिया सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है वहीं कभी–कभी नकारात्मक बातों का भी बहुत प्रचार हुआ है। बहुत मामलों में यह पारिवारिक विघटन के लिए भी उत्तरदायी है। युवा आभासी संबंधों के कारण वास्तविक संबंधों को तवज्जो नहीं दे पा रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में सोशल मीडिया का परिवारों पर पड़ने वाले प्रभावों का युवाओं को केंद्र में रखकर अध्ययन किया गया है।

Social media has become increasingly popular among people. Now people's lifestyle, social relationships, and family relationships are changing rapidly due to social media. Social media has both positive and negative effects on families. While social media is playing an important role in removing social evils, sometimes there is a lot of publicity about negative things. In many cases it is also responsible for family disintegration. The youth are not able to pay attention to the real relationships due to virtual relationships. In the research paper presented, the impact of social media on families has been studied by keeping the youth at the center.

मुख्य शब्द : सोशल मीडिया, ज्ञान , परिवार , सोशल नेटवर्किंग साइट्स, चैटिंग, युवा, पारिवारिक संबंध, आभासी समाज ।
Social media, knowledge, family, social networking sites, chatting, youth, family relations, virtual society.

प्रस्तावना

सोशल मीडिया का पिछले 10 से 15 वर्षों में तेजी से विकास हुआ है। इन वर्षों में सोशल मीडिया एक स्थान विशेष से निकलकर वृहद स्तर पर स्थापित हो चुका है। जिसमें 1 बिलियन से अधिक इंटरनेट उपभोक्ता जुड़े हैं वह अपने खाली समय एवं काम के समय दोनों में सोशल मीडिया का प्रयोग करते हैं। मानव एक सामाजिक प्राणी है तथा हमेशा सामाजिक वातावरण में रहने चाहता है। सोशल मीडिया के प्रसार एवं दिन प्रतिदिन के जीवन में इसके बढ़ते उपयोग ने मनुष्य को मुख्य रूप से युवाओं को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

अन्द्रेस काप्लान एवं मिशेल हैनलेन के अनुसार "सोशल मीडिया इंटरनेट आधारित अनुप्रयोग (एप्लिकेशन्स) का समूह है जो वेब 2.0 के सिद्धांत पर वैचारिक एवं तकनीकी रूप से निर्मित है और यह इसके उपयोगकर्ताओं को वस्तु (कन्टेट) के निर्माण एवं आदान प्रदान की अनुमति प्रदान करता है"। स्वर्ण सुमन के अनुसार सोशल मीडिया तकनीक और सामाजिक व्यवहार का संलयन है। दूसरे शब्दों में जिस मीडिया का उपयोग समाज में लोगों को आपस में जोड़ने अथवा सोशल बनाने के लिए किया जाता है उसे सोशल मीडिया कहा जा सकता है। सामाजिकता का तत्व इसे अन्य मीडिया से अलग करता है। तकनीकी अर्थों में जिस मीडिया का उपयोग इंटरनेट आधारित विभिन्न प्रौद्योगिकियों, कंप्यूटर, मोबाइल, टेबलेट आदि के माध्यम से यूजर जनरेटेड कंटेंट (उपयोगकर्ता निर्मित सामग्री) को साझा और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है उसे सोशल मीडिया कहा जाता है। यह बेव, मोबाइल एवं

अन्य उपकरण आधारित वैसी तकनीक है जिसके माध्यम से लोग सामग्री का उत्पादन, उपभोग और साझा करते हैं तथा इसमें एक उपयोगकर्ता, निर्माता, वितरक, संपादक और उपभोक्ता सभी की भूमिका का निर्वाह कर सकता है। डेविड लैंड्सबर्गेन के अनुसार सोशल मीडिया उपकरणों का एक मंच है जो सामाजिक संचार की नई आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। सोशल मीडिया एक उपकरण है जो :(1) व्यक्तियों को अधिक सुगमता से मानवी नेटवर्क का उपयोग करने की अनुमति देता है (2) ब्रॉडकास्ट संचार की अपेक्षा अंतः क्रियात्मक है (3) शक्तिशाली है क्योंकि यह न केवल टेक्स्ट का प्रयोग करता है बल्कि वीडियो ऑडियो के साथ साथ मल्टीमीडिया है और (4) संचार को सुविधाजनक बनाने के लिए साधन और उद्देश्यों पर निर्भर करता है।

सोशल मीडिया में इंटरनेट आधारित एप्लीकेशंस का उपयोग होता है, जो इसके उपयोगकर्ताओं को वस्तु (कंटेंट) के निर्माण एवं आपस में आदान–प्रदान की सुविधा प्रदान करता है। फेसबुक, ऑरकुट, ट्विटर, लिंकड्इन, यूट्यूब, गूगल प्लस, व्हाट्स–ऐप, वाइबर आदि प्रमुख सोशल नेटवर्किंग साइट्स हैं जिस पर लाखों युवा अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं। सोशल नेटवर्किंग एक ऑनलाइन सेवा है जो उपभोक्ताओं को वास्तविक जीवन की ही तरह आभासी नेटवर्क से जुड़ने की सुविधा प्रदान करता है। यह संदेश प्रेषण, चैट, वीडियो एवं फोटो शेयरिंग की सुविधा प्रदान करता है। वर्तमान में सोशल नेटवर्किंग साइट सोशल मीडिया का सबसे प्रमुख रूप है। फेसबुक 2700 मिलियन उपभोक्ताओं के साथ सबसे प्रसिद्ध सोशल नेटवर्किंग साइट है। प्रमुख सोशल नेटवर्किंग साइट्स निम्नवत् है –

लिंकडिन

2003 में एक और सफल साइट की स्थापना हुई और वह थी लिंकडिन इसने सोशल नेटवर्किंग पर पूरी तरह पेशेवर और व्यापारिक दृष्टिकोण अपनाया। जहां अन्य साइट सामाजिक सम्मिलन करने दोस्त बनाने पुराने सहपाठियों से पुनर्मिलन पर जोर दे रहे थे। वहीं लिंकडिन ने अपना ध्यान व्यवसायिक एवं पेशेवरों के साथ संपर्क पर केंद्रित किया। इस तरह यह पूरी तरह व्यापार को समर्पित सोशल नेटवर्क था। यह आज भी दुनिया की लोकप्रिय सोशल नेटवर्किंग साइटों में से एक है ।

फेसबुक

2004 में हार्वर्ड विश्वविद्यालय में कंप्यूटर साइंस के छात्र मार्क जुकरबर्ग ने फेसबुक की स्थापना की। इसकी स्थापना हार्वर्ड के छात्रों को जोड़ने के उद्देश्य की गई थी। परंतु कुछ ही दिनों में अन्य कालेजों तक इसका विस्तार हो गया। 2008 में माइस्पेस को पीछे छोड़कर फेसबुक दुनिया के नंबर एक सोशल नेटवर्किंग साइट बन गयी और आज तक बनी हुई है।

यूट्यूब

वीडियो शेयरिंग साइट में सबसे बड़ी वेबसाइट यूट्यूब है। इसकी स्थापना 2005 में चैड हर्ले, स्टीव चेन एवं जावेद करीम ने की थी। यूट्यूब वीडियो शेयरिंग की सबसे प्रसिद्ध साइट है। 2006 में गूगल ने इसका अधिग्रहण 1.65 अरब डालर में कर लिया है। आज सोशल मीडिया की वह सभी वेबसाइट जिनमें वीडियो एक प्रमुख एप्लीकेशन होता है वह प्रायः यूट्यूब के लिंक से जुड़ा होता है।

ट्विटर

2006 में ब्लॉग, इंस्टेंट मैसेजिंग और सोशल नेटवर्क इन तीनों को मिलाकर एक माइक्रोब्लॉगिंग साइट ट्विटर की स्थापना हुई। इसे निर्मित करने का श्रेय अमेरिकी वेब डेवलपर जैक दोरजी, नोह ग्लास, इवान विलियम और बीच स्टोन को जाता है। ट्विटर एक माइक्रोब्लॉगिंग वेबसाइट है जो पारंपरिक ब्लॉग का ही एक भिन्न रूप है। ब्लॉग में जहां लोग कुछ सौ शब्दों में अपनी अभिव्यक्ति करते हैं वहीं इसके विपरीत माइक्रोब्लॉग में कुछ 100 अक्षरों या उससे कम में अभिव्यक्ति संभव है। ट्विटर में संदेश भेजने और प्राप्त करने की सीमा 140 अक्षर है। संदेश को प्रेषित करना ट्विट कहा जाता है और दूसरे उपयोगकर्ता जो जुड़े हैं उन्हें फॉलोअर कहा जाता है। आज ट्विटर सर्वाधिक प्रसिद्ध माइक्रोब्लॉगिंग है।

व्हाट्स–ऐप

व्हाट्स–ऐप स्मार्टफोन पर चलने वाली एक प्रसिद्ध एप्लीकेशन है जिसकी सहायता से हम घर बैठे किसी भी व्यक्ति को इंटरनेट के द्वारा दूसरे व्हाट्स–ऐप उपयोगकर्ता के स्मार्टफोन पर ऑडियो वीडियो डाक्यूमेंट्स चित्र आदि के साथ–साथ अपनी लोकेशन भी शेयर कर सकते हैं। व्हाट्स–ऐप की शुरुआत 2009 में जॉन कौम और ब्रायन एक्टन नामक दो व्यक्तियों द्वारा की गई थी। 2014 में फेसबुक ने व्हाट्स–ऐप का अधिग्रहण कर लिया। लेकिन फिर भी व्हाट्स–ऐप अपना कार्य स्वतंत्र रूप से कर रहा है। अक्टूबर 2020 तक 2000 मिलियन उपभोक्ता हो गए।

टेलीग्राम

टेलीग्राम एक मैसेजिंग एप हैं जो क्लाउड पर आधारित मैसेंजिंग और वॉइस ओवर आईपी (इंटरनेट प्रोटोकॉल) सर्विस देता हैं। टेलीग्राम का हिंदी अर्थ होता 'तार का समाचार'। इसे हम किसी भी एप स्टोर से डाउनलोड करके उसका उपयोग करके किसी को भी क्षणभर में अपना संदेश उन तक पहुंचा सकते हैं।यह क्लाउड पर आधारित हैं यानि इस ऐप का डेटा किसी भी डिवाइस की जगह टेलीग्राम के किसी सर्वर पर स्टोर होगा। अब तक यह ऐप 40 करोड़ से भी अधिक बार डाउनलोड किया जा चुका हैं। बड़े भाई निकोलाई ने सॉफ्टवेयर का आधार तैयार किया और पावेल ने उसे आर्थिक रूप से सहयोग दिया। अगस्त 2013 में टेलीग्राम सबसे पहली बार लॉच हुआ। 2013 में टेलीग्राम के एक लाख उपभोक्ता थे। फरवरी 2016 तक उनके दस करोड़ उपभोक्ता हो गए और रोज 150 करोड़ संदेशों का आदान–प्रदान होता था। अक्टूबर 2020 तक 400 मिलियन उपभोक्ता हो गए।

सारिणी– 1
प्रमुख सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपभोक्ताओं की संख्या (अक्टूबर 2020 में)–

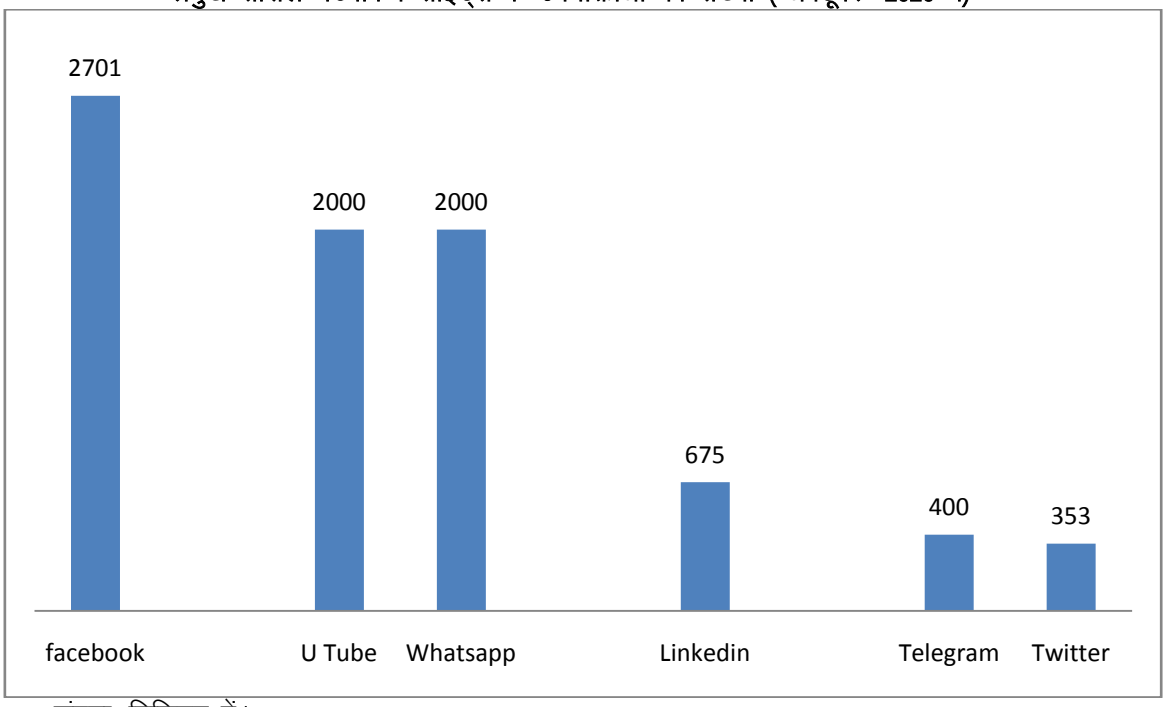

संख्याः मिलियन में।
सभार : स्टैटिका डॉट कॉम।

अध्ययन का उद्देश्य

1. परिवारों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का विश्लेषण करना है।
2. परिवारों पर सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव का विश्लेषण करना है।
3. सोशल मीडिया के कारण पारिवारिक विघटन हो रहा है, इसका विश्लेषण करना है।

सोशल मीडिया और परिवार

सोशल मीडिया लोगों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो गया है। सोशल मीडिया ने लोगों को आपस में जोड़ा है। दुनिया के किसी भी कोने से एक–दूसरे से बात करने के साथ वीडियो कॉलिंग के माध्यम से एक–दूसरे को देखा भी जा सकता है, लेकिन इसका दूसरा पहलू यह भी है कि एक परिवार में साथ रहते हुए भी सदस्यों को अलग–थलग कर दिया है। पारिवारिक एवं सामाजिक संबंध सोशल मीडिया से तेजी से प्रभावित हो रहे हैं। सोशल मीडिया ने जीवन के सभी क्षेत्रों को विशिष्ट ढंग से प्रभावित किया है मुख्य रूप से युवाओं के पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों को। युवा वर्ग में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का क्रेज दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। युवा आज सोशल मीडिया की लत का शिकार हो चुका है। युवाओं की इसी अभिरुचि के कारण आज सोशल नेटवर्किंग दुनियाभर में इंटरनेट पर होने वाली प्रमुख गतिविधि बन गयी है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने पूरे समाज की तस्वीर ही बदल डाली है। न केवल लोगों की आदतें बदली हैं, बल्कि सोच पर भी गहरा असर पड़ा है। विश्वसनीयता न होने के बावजूद सोशल मीडिया सूचनाओं के आदान–प्रदान का प्रमुख माध्यम होता जा रहा है। सोशल मीडिया पर पति–पत्नी के सक्रिय रहने के कारण आए दिन परिवार टूट रहे है। घर के अंदर भी शिक्षित महिलाएं सुरक्षित नहीं है। अमर उजाला (13 जनवरी 2018, नोयडा) की खबर के अनुसार एक महिला ने पुलिस मे शिकायत दर्ज कराई कि उसके पूर्व पुरुष मित्र ने महिला के फेसबुक पर अश्लील सामग्री अपलोड की है, उसे पहले से ही पासवर्ड पता था, जिसके कारण उस महिला का वैवाहिक जीवन टूटने के कगार पर पहुंच गया। सोशल मीडिया पर ही ज्यादातर रिश्ते, त्योहार व अन्य सामाजिक बंधन निभाए जा रहे हैं। वास्तविकता से

दूर लोग काल्पनिक समाज में जी रहे हैं। पहले लोग त्योहारों पर एक–दूसरे से जुड़े होते थे। एक साथ मिलकर रसोईघर में बैठ पकवानों का मजा लेते थे। मिठाई बांटकर एक–दूसरे के घर जाकर त्योहारों पर बधाई देने जाते थे, परंतु आज वहीं लोग व्हाट्स–ऐप, फेसबुक आदि सोशल मीडिया पर ही औपचारिकता निभाते हैं। सोशल मीडिया से लोगों में आपसी लगाव कम हो गया है। एक घर में रहते हुए भी लोग एक दूसरे से दूर हो रहे हैं। शहरी परिवारों में तो सोशल मीडिया रिश्तों की संस्कृति को नए सिरे से परिभाषित कर रहा है। सोशल मीडिया के ज्यादा इस्तेमाल से खासकर के शिक्षित पति–पत्नी के संबंधो में तकरार आ रही है। फेसबुक, व्हाट्स–ऐप व स्काइप आदि सोशल मीडिया के जरूरत से ज्यादा प्रयोग करने से परिवार बिखर रहे हैं। डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, स्नातक, स्नातकोत्तर, सरकारी अफसर व एमएनसी कम्पनी में अच्छे स्थान पर काम करने वाले दंपत्तियों के सोशल मीडिया पर हरदम सक्रिय रहने के कारण आए दिन परिवार टूट रहे है। सोशल मीडिया का सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रभाव है। जहाँ एक ओर सोशल मीडिया सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है वहीं कभी–कभी नकारात्मक बातों का भी बहुत प्रचार हुआ है। लोगों को सामाजिक जड़ों से काट दिया है और आज पारिवारिक मूल्य का महत्व भी कम हो गया है।

सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव

1. यूट्यूब की सहायता से माता– पिता अपने बच्चों को नवीन ज्ञान से आसानी से परिचित करा सकते हैं।
2. यूट्यूब की मदद से शिक्षा बहुत सुविधाजनक हो गई है। छात्र आसानी से कक्षा के काम या असाइनमेंट के लिए महत्वपूर्ण डेटा साझा कर सकते हैं। यह प्रोजेक्ट रिपोर्ट और अन्य शैक्षिक उद्देश्यों को तैयार करने के लिए जानकारी एकत्र करने के लिए भी प्रभावी है।
3. सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर जुड़ना युवाओं के लिए एक नयी हॉबी हो सकती है।
4. सोशल मीडिया के माध्यम से पेशेवर लोगों से ज्ञान प्राप्त करना बहुत आसान हो गया है। अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए आसानी से किसी को भी फॉलो किया जा सकता है।
5. सोशल मीडिया ने जीवन काफी आसान कर दिया है। अब पढ़ाई या रोजगार के सिलसिले में विदेश या घर से दूर रहने वाली संतान वीडियो कालिंग सुविधा के चलते अपने माता–पिता व परिजनों से आमने–सामने बैठ कर बात कर सकती है।
6. सोशल मीडिया पति– पत्नी जो एक दूसरे से किन्ही करने से दूर रहते हैं वे सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट पर लगातार सम्पर्क में बने रहते हैं।
7. सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर लोकेशन आधारित सुविधा होने से माता पिता को बच्चों की अवस्थिति पर नजर बनाये रखने में मदद मिलती है।
8. अब शादी और पार्टियों के कार्ड सोशल मीडिया के जरिए भेजे जाने लगे हैं। जिससे धन एवं समय की बचत हो रही है लोग परिवार को अधिक समय दे सकते हैं ।
9. आज के भौतिकतावादी समाज में परिवार में तृतीयक नातेदारों का महत्व कम होता जा रहा है। सोशल मीडिया ने पुनः एक मंच प्रदान किया है जहां पर दूर के नातेदारों से संपर्क बनाये रखना आसान हो गया है। यह लोगों को उनके दोस्तों व रिश्तेदारों की पसंद–नापसंद और सामाजिक दायरे से जोड़ता है। फैमिली ग्रुप के द्वारा परिवार के सदस्य दूर रहकर भी प्रतिदिन आपस में जुड़े रहते हैं।
10. आज सयुंक्त परिवार तेजी से नाभिकीय परिवार में बदल रहे हैं परन्तु परिवार के सदस्य सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट पर लगातार जुड़े रहते हैं, जिसके कारण परिवार में सयुंक्तता बनी रहती है।
11. प्राकृतिक आपदा या दुर्घटना में परिवार से बिछड़े लोगों की पहचान अब आसान हो गई है। सोशल मीडिया की किसी गुमशुदा व्यक्ति को परिवार तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका है।
12. सोशल मीडिया के द्वारा परिवार के पुश्तैनी कला नृत्य, गीत ,हस्तकला आदि को नया आयाम मिला है।

सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव

1. युवा सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग ना सिर्फ मित्र बनाने के लिए बल्कि पुरुष मित्र और महिला मित्र ढूंढने के लिए भी कर रहे हैं। सोशल नेटवर्किंग आपसी रिश्तों में खटास पैदा करने का कारण भी बन रहा है। फेक प्रोफाइल इसका एक उदाहरण है।
2. कम उम्र के लड़के और लड़कियों की आदत होती है कि उत्साह में प्रोफाइल पर अपनी सभी जानकारी साझा कर देते हैं। प्रोफाइल पर अपना फोन नंबर, घर का पता या फिर कोई भी प्राइवेट इनफार्मेशन शेयर करने से कई बार समस्या आ जाती है।
3. ऑन लाइन होने पर कुछ लोग खुद को जैसा प्रदर्शित करते हैं वे वास्तविक जीवन में वैसे नहीं होते। बाद में हकीकत जानने पर रिश्ते में दरार आने लगती हैं।
4. कुमार हरीश ने 2014 में पीढ़ी अंतराल तथा न्यू मीडिया के बीच के संबंधों का अध्ययन किया। उनके अनुसार युवा नवीनतम जीवन शैली एवं नई तकनीकों को अपनाते हैं, जबकि उनके माता– पिता पुराने विचारों से बंधे हुए होते हैं, इसे पीढ़ी अंतराल कहा जाता है। न्यू मीडिया ने पीढ़ी अंतराल को बढ़ाने का कार्य किया है। इसने लोगों को उनके परिवार से दूर कर दिया है। साथ ही लोगों की निजता को संकट में डाल दिया है।
5. सॉर्बिंग ने 2012 में स्वीडन में माता–पिता का अध्ययन किया तथा पाया अधिकतर माता–पिता अपने बच्चों को लेकर के उनके इंटरनेट प्रयोग के संदर्भ में चिंतित हैं। यह उनके साथ उनके बच्चों के संबंधों को प्रभावित कर रहा है। उन्होंने 798 माता–पिता का अध्ययन किया जिसमें 307 पिता तथा 491 माता थी तथा उनके बच्चों की आयु 13 से 15 साल के बीच की थी। उन्होंने पाया कि माता–पिता बच्चों को

लेकर के चिंतित हैं तथा उनकी चिंताओं का कारण विभिन्न प्रकार का है। माता–पिता चाहते हैं कि उनके टीनएजर्स बच्चे इंटरनेट का सावधानी से प्रयोग करें तथा वह स्वयं इस संबंध में बात करना पसंद करते हैं।

6. परिवार को प्राथमिक पाठशाला कहा जाता है बच्चे के समाजीकरण पर सबसे अधिक प्रभाव परिवार का पड़ता है परंतु आजकल देखा जा रहा है कि बच्चे परिवार के सदस्यों के साथ बातचीत नहीं करना चाहते हैं। यहां तक कि परिवार के सदस्य परिवार में भौतिक रूप से उपस्थित होकर भी अनुपस्थित रहते हैं क्योंकि वे सोशल मीडिया पर आभासी मित्रों के साथ वार्तालाप में व्यस्त होते हैं, इसके कारण पारिवारिक तनाव की स्थिति आ जाती है। माता–पिता का यह कर्तव्य है कि बच्चों को अच्छे और बुरे का बोध कराएं ताकि वे एक बेहतर नागरिक बन सकें। सोशल नेटवर्किंग के आ जाने से बच्चे मां बाप से ना सीखकर सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर चैटिंग में व्यस्त रहते हैं। कई बार सोशल मीडिया के द्वारा उनकी पहुँच अश्लील सामग्री तक हो जाती है, जिससे बच्चों में गलत लत लग जाती है।
7. सोशल मीडिया आजकल डिप्रेशन का प्रमुख कारण बनता जा रहा है। लोग सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर अपने आप को बढ़ा चढ़ाकर प्रदर्शित करते हैं परंतु अपेक्षा के अनुरूप लाइक और कमेंट न मिलने के कारण वे डिप्रेशन में चले जाते हैं तथा रात– रात भर चैटिंग करने से परिवार को कम समय दे पाते हैं। इसके कारण पारिवारिक कलह शुरू हो जाती है।
8. परिवार प्रथाओं, परंपराओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करता है। सोशल नेटवर्किंग के आ जाने से दादा– दादी की कहानियां अब बच्चे नहीं सुन पाते हैं, जबकि उन कहानियों में परिवार की संस्कृति की एक झलक होती है।
9. सोशल मीडिया पर अधिकतर सामग्री अप्रमाणित होती है, युवा उसे बिना किसी पड़ताल के फॉरवर्ड कर देते हैं। कई बार अफवाहों के कारण दंगों की स्थिति आ जाती है। हाल ही में दिसंबर 2019 में नागरिकता संशोधन अधिनियम को लेकर सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर अफवाह फैलाई गई, जिसके कारण सरकार को इंटरनेट तक बंद करना पड़ गया। इतना ही नहीं अफवाह फैलाने वालों पर जब कार्यवाही की गई तब कई किशोरों को भी जेल जाना पड़ा, जो बिना कुछ देखे ही अप्रमाणित सामग्री को ही फॉरवर्ड करते हुए पाए गए थे। निश्चित रूप से परिवार के लिए सोशल मीडिया का यह रूप किसी संकट से कम नहीं है।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया ने एक आभासी समाज का निर्माण किया है, जो वास्तविक समाज से भिन्न है, लेकिन वास्तविक समाज उससे काफी अधिक प्रभावित हो रहा है। राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक संस्थाएं इससे अधिक प्रभावित हो रही हैं। सोशल मीडिया ने युवाओं की दिनचर्या, जीवनशैली, अभिरुचि, सामाजिक संबंधों आदि को सभी दृष्टिकोण से प्रभावित किया है अधिकतर विद्यार्थी महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय की कक्षाओं के पश्चात व्यायाम, खेल, शारीरिक गतिविधि में भाग ना लेकर अब सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर अपना समय व्यतीत करते हैं तथा माता पिता के पास अब उनके लिए समय नहीं रहा है। हालांकि सोशल मीडिया से दूर के रिश्तेदार और निकट आ गए हैं । फैमिली ग्रुप आदि के माध्यम से युवा दूर के रिश्तेदारों से भी जुड़ रहे हैं। युवाओं के जीवन में अब केवल वह दोस्त ही नहीं है जिन्हें वह भली–भांति जानते हैं बल्कि अब ऐसे लोगों से भी मित्रता होने लगी है जो शायद वास्तविक जीवन में ना कभी मिले हैं और ना ही कभी मुलाकात होने की संभावना है परंतु यह भी पाया गया कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स से वास्तविक जीवन के मित्रों से जुड़ने में आसानी हुई है। नवयुवकों का अपने प्रेम का प्रदर्शन या फिर महिला मित्र अथवा पुरुष मित्र से चैटिंग करना सोशल नेटवर्किंग साइट्स से आसान हो गया है लेकिन सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने पति पत्नी के बीच तनाव, विवाहेत्तर संबंध आदि के मामले भी बढ़ाएं हैं, जो अंततः पारिवारिक विघटन का कारण है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के कारण परिवार अब टूट रहें हैं। पति– पत्नी के बीच सोशल नेटवर्किंग साइट्स के कारण तलाक के मामले बढ़ रहे हैं। ऐसे में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग परिवार में कम से कम होना चाहिए। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के लत का शिकार जिस तरह लोग हो रहे हैं यदि समय रहते इस पर अंकुश नहीं लगाया गया तो परिवार में सदस्य एक दूसरे के लिए अजनबी बन कर रह जायेंगे। जिसका सीधा असर बच्चों के समाजीकरण पर पड़ेगा। अब लोगों को सोशल नेटवर्किंग साइट्स के दुष्प्रभाव के बारे में जागरूक करना होगा तभी इसका समुचित लाभ समाज को मिल सकेगा। अतः यह कहा जा सकता है कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग विवेक के साथ करना उचित होगा तथा युवाओं को यह भी ध्यान रखना होगा कि वास्तविक जीवन ही सत्य हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग वास्तविक जीवन के सामाजिक संबंधों को और मजबूत करने के लिए ही होना चाहिए ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *D. Landsbergen, "Government as Part of the Revolution : Using Social Media to Achieve Public Goals" Electronic Journal E- Government 8, no.02, (2010)*
2. *Dubey , Diwakar,Social Media Activism: Ek Rajneetik Hatiyar, Sahity Prakashan.(2019)*
3. *Kaplan, A.M. Haenlein M. The Fairy land of second life about virtual social world and how to use them business Horizons 52 (6) , 563- 672 (2009)*
4. *Kumar, Harish. Digital Media: What is New in this New Media?, Social Media and New Technologies, New Delhi: Kanishka Publishers and Distributors, 2014.*
5. *Majunatha S., The usage of Social Networking sites Among the College Students in India*

International Research Journal of Social Sciences, 2(5) 15- 21 (2013)

6. *Sorbing, E, "Parent's Concerns About their Children's Internet use" journal of family issues Vol. 35(1), No,75-96, 2012*
7. *Suman, Swarn., Social Media: Sampark kranti ka kal aaj aur kal, Harpar hindi Prakashan (2014)*
8. *https://www.bhaskar.com/mp/bhopal/news/mp-news-how-much-what-and-how-social-media-and-internet-affect-the-family-065505-5364468.html*
9. *https://hindisahayta.in/telegram-kya-hai/*
10. *https://www.statista.com/statistics/272014/global-social-networks-ranked-by-number-of-users/*
11. *https://www.livehindustan.com/news/ncr/article1-educated-family-broken-from-social-media-593349.html*